9वें राष्ट्रमंडल संसदीय संघ (सीपीए) भारत क्षेत्र सम्मेलन में माननीय अध्यक्ष का समापन भाषण

भारत के माननीय उप-राष्ट्रपति, श्री जगदीप धनखड़ जी;

राजस्थान के माननीय राज्यपाल, श्री कलराज मिश्र जी;

सीपीए कार्यकारी समिति के माननीय अध्यक्ष, श्री इयान लिड्डेल ग्रेनजर जी;

राजस्थान विधान सभा के माननीय अध्यक्ष, डॉ सी.पी. जोशी जी ;

उत्तर प्रदेश विधान सभा के माननीय अध्यक्ष श्री सतीश महाना जी;

सीपीए, राजस्थान चैप्टर के सचिव श्री संयम लोढ़ा जी,

राजस्थान विधान सभा के माननीय सदस्यगण;

अन्य माननीय पीठासीन अधिकारीगण,

माननीय जनप्रतिनिधिगण और सीपीए भारत क्षेत्र के सचिव;

शिष्टमंडल के माननीय सदस्यगण; देवियो और सज्जनो;

विशिष्ट प्रतिनिधिगण, अब हम CPA इंडिया रीजन के 9वें सम्मेलन की समाप्ति की ओर आ गए हैं। सर्वप्रथम, माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी का हार्दिक आभार कि उन्होंने इस सम्मेलन में आने के लिए अपनी व्यस्तता में भी समय निकाला। मैं समस्त पीठासीन अधिकारियों की ओर से आपका स्वागत करता हूँ, अभिनंदन करता हूँ।

राजस्थान के माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र जी का भी इस सम्मेलन में हार्दिक स्वागत और अभिनंदन है।

दो दिन तक चले इस सम्मेलन के अंदर सभी पीठासीन अधिकारियों ने जीवंत और सार्थक चर्चा संवाद किया।

दो दिन तक चले इस सम्मेलन के अंदर सभी पीठासीन अधिकारियों ने जीवंत और सार्थक चर्चा संवाद किया है, अपने अनुभवों को, अपने विचारों को, अपने बेस्ट प्रैक्टिसेज को साझा किया है।

हमारा उद्देश्य रहा है कि हम भविष्य में किस तरीक़े से एक रोड मैप बनायें, ताकि आने वाले समय में हमारे लोकतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से जनता की सक्रिय भागीदारी और अधिक बढे।

"डिजिटल के माध्यम से सक्रिय संवाद - विधान मंडलों की मिलेगी जानकारी,

डिजिटल के माध्यम से आने वाले समय में कानून और हुई चर्चा की मिलेगी जानकारी,

डिजिटल के माध्यम से लोक सभा और विधान मंडलों में हुए प्रमुख मुद्दों की मिलेगी जानकारी

डिजिटल के माध्यम से जनता को मिलेगी विधान मंडलों की कार्यवाही की जानकारी" डिजिटल के माध्यम से हम विधान मंडलों को जनता से जोड़ पाएंगे। डिजिटल के माध्यम से हम सुशासन स्थापित कर पाएंगे। डिजिटल के माध्यम से हम पारदर्शी एवं जवाबदेह शासन स्थापित कर पाएंगे।

हमने सीपीए इंडिया रीजन के नौ ज़ोन स्थापित किये हैं। हम इन सीपीए ज़ोन की गतिविधियों को बढ़ाएंगे। हम हमारे विधान मंडलों में सक्रिय भागीदारी निभायेंगे और जो सीपीए के उद्देश्य हैं, उनको पूरा करने का काम करेंगे।

कॉमनवेल्थ पार्लियामेंट्री असोसिएशन एवं अन्य सीपीए क्षेत्रों एवं सीपीए भारत क्षेत्र की शाखाओं के बीच संपर्क एवं संवाद के माध्यम के रूप में काम करना, सीपीए भारत क्षेत्र की विभिन्न शाखाओं के विशेष संदर्भ में संसदीय लोकतंत्र के संवैधानिक, वैधानिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करना तथा उनके संबंध में ज्ञान और सूचना का प्रसार करना, और सीपीए भारत क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रों एवं एशिया महाद्वीप के अन्य लोकतांत्रिक देशों के साथ निकट संपर्क स्थापित करना।

कई माननीय पीठासीन अधिकारियों ने दो दिनों तक हुई चर्चा में कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए। उन महत्वपूर्ण सुझावों को अपनाकर हम इस संस्था को और बेहतर और परिणाममूलक बनाएंगे।

जो हमने दो दिन तक मंथन किया है, उन सारे निर्णयों को हम समयबद्ध तरीक़े से लागू करने के लिए उसकी कार्य योजना बनाएंगे।

हम अपनी अपनी संस्थाओं के अंदर बदलते परिप्रेक्ष्य में विज्ञान और टेक्नोलॉजी का उपयोग करेंगे ताकि हमारी संस्थाएं प्रभावी परिणाम ला सकें।

देश के अंदर आर्थिक सामाजिक और विश्व के जो बड़े एजेंडे और चुनौतियाँ है, उन चुनौतियों का समाधान भारत की लोकतांत्रिक संस्थाओं से निकले।

विधायकों की राष्ट्र निर्माण में भूमिका के विषय के अंदर चाहे राज्य के विधान मंडल हों या केंद्र के विधान मंडल, इस अमृत काल के अंदर जब हमारी आज़ादी के सौ वर्ष पूरे होंगे और उस समय हमारी इन संस्थाओं के माध्यम से हम देश के अंदर आर्थिक सामाजिक और विश्व के जो जो बड़े एजेंडे और चुनौतियाँ है, उन चुनौतियों का समाधान भारत की लोकतांत्रिक

संस्थाओं से निकले। उसमें हमारे जनप्रतिनिधियों की और हमारे विधान मंडलों की विशेष रूप से भूमिका होनी चाहिए।

क़ानूनों में आवश्यक परिवर्तन करके पारदर्शी और जवाबदेह शासन व्यवस्था के साथ क़ानून के माध्यम से हम सामाजिक आर्थिक परिवर्तन करते हुए विकसित भारत की ओर आगे बढ़े।

हमारी कोशिश होनी चाहिए कि वर्तमान चुनौतियों और मुद्दों पर चर्चा हो और भविष्य के अंदर आने वाले चुनौतियों और उनके समाधान पर चर्चा हो, और आवश्यक क़ानून में परिवर्तन करके पारदर्शी और जवाबदेह शासन व्यवस्था के साथ क़ानून के माध्यम से हम सामाजिक आर्थिक परिवर्तन करते हुए विकसित भारत की ओर आगे बढ़े।

जनप्रतिनिधियों द्वारा अपने क्षेत्रों और राज्यों के महत्वपूर्ण मुद्दों के समाधान के लिए सकारात्मक पहल करना और भविष्य के लिए एक ऐसी व्यापक कार्ययोजना बनाना ताकि हम एक समृद्ध और विकसित भारत बना सकें।

और इसलिए हमारे जनप्रतिनिधियों की भूमिका महत्वपूर्ण है। जन प्रतिनिधियों द्वारा विधान मंडलों में चर्चा संवाद में चर्चा संवाद के स्तर को ऊपर उठाना, कानून बनाते हुए उसमें सक्रिय भागीदारी करना और अपने अपने क्षेत्रों और राज्यों के महत्वपूर्ण मुद्दों के समाधान के लिए सकारात्मक पहल करना और भविष्य के लिए एक ऐसी व्यापक कार्ययोजना बनाना ताकि हम एक समृद्ध और विकसित भारत बना सकें।

विधान मंडलों की गरिमा और प्रतिष्ठा इस बात पर निर्भर करती है कि हमारे जनप्रतिनिधि किस प्रकार सदनों में वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों और उनके समाधान पर सार्थक चर्चा संवाद कर रहे हैं।

मेरा मानना है कि समृद्ध और विकसित भारत बनाने में संसदीय लोकतंत्र हमारी सबसे मज़बूत शासन व्यवस्था है। और इसीलिए संसदीय लोकतंत्र के अंदर विधान मंडलों की गरिमा और प्रतिष्ठा इस बात पर निर्भर करती है कि हमारे जनप्रतिनिधि किस प्रकार सदनों में वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों और उनके समाधान पर सार्थक चर्चा संवाद कर रहे हैं। हमारे विधान मंडलों की गरिमा और प्रतिष्ठा तभी बढ़ेगी, जब वहाँ पर चुनकर आने वाले जनप्रतिनिधि देश और समाज के महत्वपूर्ण मुद्दों पर सार्थक चर्चा संवाद करेंगे।

यहाँ पर जो विचार विमर्श हुए हैं, नए सुझाव दिए गए हैं, उससे देश और प्रदेश की जनता के आर्थिक सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त होगा, एस डी जी के तहत तय किये गए लक्ष्यों से भी आगे जायेंगे तथा अमृत काल में हमारा देश एक विकसित और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में विश्व में अपना स्थान ग्रहण करेगा।

यहाँ पर पिछले दो दिनों में जो विचार विमर्श हुए हैं, नए सुझाव दिए गए हैं, उससे निश्चित रूप से विधान मंडलों को नई चुनौतियों के लिए तैयार करने में सहायता मिलेगी। देश और प्रदेश की जनता के आर्थिक सामाजिक परिवर्तनका मार्ग प्रशस्त होगा, हम एसडीजी के तहत तय किये गए लक्ष्यों से भी आगे जाकर एक मानव विकास के उच्चतम आयाम प्राप्त करेंगे तथा

अमृत काल में हमारा देश एक विकसित और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में विश्व में अपना स्थान ग्रहण करेगा।

इसी आशा और विश्वास के साथ मैं आप सभी पीठासीन अधिकारियों को पुनः बधाई देता हूँ और कामना करता हूँ कि हम सब मिलकर विधान मंडलों को पुनः राष्ट्र निर्माण के लिए संकल्पित करेंगे, समर्पित करेंगे.

मैं इस सम्मेलन में सक्रिय भागीदारी के लिए आप सभी का साधुवाद करता हूं। जो विषय इस सम्मेलन के लिए रखे गए थे, उन विषयों पर चर्चा संवाद को आपने जीवंत, रुचिकर, सार्थक और प्रासंगिक बनाया है। दो दिनों तक आपने यहाँ पर परस्पर चर्चा संवाद किया, अपने ज्ञान और अनुभवों को साझा किया, अपने बेस्ट प्रेक्टिसेज़, अपने नवाचारों को एक दूसरे से साझा किया।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि यह सम्मेलन अत्यंत सफल रहा। अपना बहुमूल्य समय निकालकर चर्चा में पूरे उत्साह के साथ भाग लेने और सम्मेलन के दौरान अपने मूल्यवान विचार साझा करने के लिए मैं आप सबका पुनः धन्यवाद करता हूँ।

इस सम्मेलन को सफल बनाने में अपना पूरा योगदान देने और सम्मेलन में आए सभी प्रतिनिधियों का भव्य स्वागत एवं आदर सत्कार करने के लिए मैं राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी; राजस्थान विधान सभा के माननीय अध्यक्ष, डॉक्टर सी पी जोशी जी, राजस्थान सरकार के माननीय मंत्रिगण और राजस्थान सरकार के विभिन्न विभागों और अन्य एजेंसियों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

माननीय उप राष्ट्रपति जी एवं माननीय राज्यपाल महोदय का पुनः आभार कि उन्होंने अपने विचारों से हमारा मार्गदर्शन किया और इस सम्मेलन की शोभा बढ़ायी।

———